बदलती राहें

Gunjan

वर्ष 01, अंक 27

धर्मशाला, सोमवार, 31 अगस्त 2015

युवाओं में मादक द्रव्यों के सेवन के इलाज के लिए जरूरी हैं खास अनुभव

मादक द्रव्यों के सेवन का शिकार युवाओं को इस लत से बाहर लाने और इलाज के लिए प्रेरित करने के लिए विशेषज्ञों में एक खास कौशल की जरूरत होती है। यह कौशल उनके विषय से जुड़े ज्ञान के अलावा उनके व्यवहार से जुड़ा होता है। एक विशेषज्ञ अपनी चिकित्सा पद्धति से ज्यादा अपने व्यावहारिक कौशल का उपयोग करके युवाओं को इस बीमारी से बाहर लाने में अहम भूमिका अदा कर सकता है। इस व्यावहारिक ज्ञान से जड़े कुछ तथ्य कनाडियन सेंटर आन सब्स्टांस एब्यूज (सीसीएसए) की रिसर्च के आधार पर पेश किए जा रहे हैं।

लिंग भेद पर विचार

माद्रक द्रव्य पदार्थ का उपयोग समस्या है, जो युवाओं के इलाज में तेजी से स्पष्ट होता जा रहा है। अब यह बात भी मायने रखती है कि नशीले पदार्थों का सेवन करने के मामले में क्या लड़कियों और लड़कों के बीच मतभेदों को ध्यान में रखने का महत्व है। महिलाओं में पुरुषों की तुलना में अधिक धीरे-धीरे शराब पचती है। शराब के कारण महिला के शरीर विकास में काफी हानि हो सकती है। लिहाजा महिला व पुरुष के मामले में शराब की लत का इलाज व इससे वापसी की प्रक्रिया का प्रबंधन और उपचार पेशेवरों के लिए निहितार्थ हैं। इसी तरह, इस रास्ते में सामाजिक स्थिति और विषमताओं (जैसे, आय, जाति, भौगोलिक स्थिति, कामुकता, जिले / क्षमता और भाषा, विरासत, संस्कृति) को भी युवाओं में मादक द्रव्यों के सेवन के इलाज की प्रकिया में ध्यान में रखा जाता है। इन मुद्दों को अतिरंजित नहीं किया जा सकता है और सभी इलाज के तरीकों में विचार किया जाना चाहिए।

प्रेरणा पर विचार

युवाओं में मादक द्रव्य पदार्थ का उपयोग से जुड़ी समस्याओं का इलाज करते समय एक प्राथमिक विचार इनके सेवन की प्रेरणा से भी जुड़ा हुआ है। यह एक अहम मुद्दा भी है। अगर किसी युवा व्यक्ति की नशे की लत का इलाज किया जा रहा है, तो इसके लिए यह बात भी मायने रखती है कि जिसका इलाज किया जा रहा वह व्यक्ति खुद को बदलने के प्रति स्वयं कितनी रुचि ले रहा है। ऐसे में जब उपचार किया जाता है तो उपचार करवाने वाले व्यक्ति को उस समय मिलने वाले साथ या प्रेरणा के चलते उसकी सफलता की संभावना काफी बढ़ जाती है।

कई युवा अपने स्वयं के समझौते या प्रेरणा के तहत इलाज के कार्यक्रमों में प्रवेश लेते हैं और खुद सहायता मांगते हैं। ऐसे मरीजों को आंतरिक या आंतरिक रूप से प्रेरित मरीज के तौर पर परिभाषित किया जाता है। वयस्कों की तरह, कुछ किशोर भी ऐसे होते हैं, जिन्हें मादक द्रव्यों के सेवन के इलाज की आवश्यकता होती है, मगर वे नशे के सेवन को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते, इन्हें व्यवहार को बदलने के लिए प्रेरित नहीं किया जा सकता। ऐसे में इन्हें या तो किसी दूसर व्यक्ति के जरिये कुछ हद तक दबाव पैदा करके या जबरदस्ती करके इलाज में प्रवेश करवाया जा सकता है। ऐसे मरीजों को बाह्य या बाहर से प्रेरित मरीज कहा जाता है।

यह बाद का समूह या बाह्य प्रेरित रोगी इलाज के दौरान अपना नजरिया और व्यवहार दिखा सकते हैं, जो व्यसन विशेषज्ञों और संबद्ध पेशेवरों दोनों के लिए विशेष तौर पर चुनौतीपूर्ण होते हैं। हालांकि, इलाज के दौरान दोनों तरह के मरीजों के समूहों के लिए हस्तक्षेप के एक जैसे सिद्धांत लागू होते हैं।

मादक द्रव्यों के सेवन और संबद्ध पेशेवरों के निहितार्थ क्या हैं?

मदद कर रहे पेशेवर मादक द्रव्यों का इस्तेमाल कर रहे युवाओं की बढ़ती संख्या देख रहे हैं। साथ ही उनके समक्ष मादक पदार्थ के उपयोग की समस्याओं से जुड़े और अधिक जटिल मुद्दे भी आ रहे हैं। ऐसी परिस्थितियां सामने आएंगी, जब कई युवा समस्याओं का सामधान निकालने के बजाय शराब और नशीली दवाओं के साथ प्रयोग को बढ़ावा देते नजर आएंगे। वहीं दूसरों को उनके उपयोग से संबंधित गंभीर परिणामों का अनुभव करने के लिए तैयार रहना पड़ेगा।

हमारी सहायता और सेवा प्रणालियां मादक द्रव्यों के सेवन का शिकार इन युवाओं से निपटने के लिए महज मादक द्रव्यों के सेवन के विशेषज्ञों और एजेंसियों पर निर्भर नहीं रह सकते। ऐसे युवा कई प्रकार के संगठनों और अलग-अलग तरह के वातावरण में मौजूद मौजूद हैं। ऐसे मामलों में मदद करने वाले सभी पेशेवरों के लिए जरूरी है कि वे उचित रूप से हस्तक्षेप करने के लिए एक बुनियादी समझ पैदा करें। मादक पदार्थ के सेवन के इलाज में एक विशेषज्ञ बनने का मतलब यह नहीं है; इसका मतलब एक ऐसी

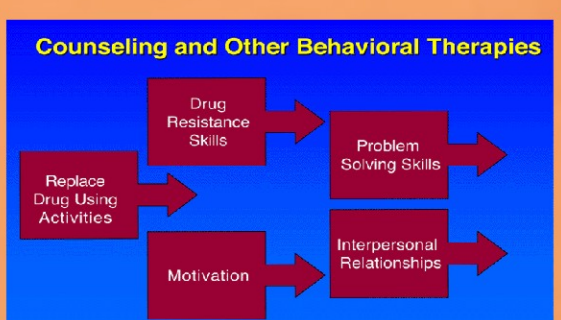

प्रतिबद्धता है, जो सभी सेवा प्रदाताओं को सेवा क्षेत्र (जैसे, मादक द्रव्यों के सेवन के इलाज, मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं) की प्रवाह किए बिना इस समस्या और कुछ युवाओं की अधिक जटिल जरूरतों से निपटने के लिए एक दूसरे के साथ सहयोग करने की इच्छा शक्ति पर आधारित होती है।

द्रव्यों के सेवन से जुड़े विशेषज्ञों के लिए, जो वयस्कों के साथ काम करने का अनुभव रखते हैं, को युवाओं के साथ एक अलग दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत हो सकती है। एक किशोर की अलग-अलग परिस्थितियां, विकास की जरूरतें और रहने की स्थिति उसके इलाज और हस्तक्षेप के चुनाव के लिए उनकी ग्रहणशीलता को प्रभावित करती हैं।

मादक पदार्थ का उपयोग करने वाले युवाओं संग काम करने की दक्षताएं

सहायक के कौशल, ज्ञान, दृष्टिकोण और मूल्यों का योगदान सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक हैं, जो मादक द्रव्यों के सेवन से प्रभावित युवाओं के साथ सलफतलापूर्वक काम करने के लिए योगदान देते हैं। साक्ष्यों की बढ़ती संख्या इस ओर इशारा करती है कि चिकित्सक के गुण की उतनी ही आवश्यकता होती है, जितनी एक विशेष प्रकार की चिकित्सा पद्धति की होती है। कुछ मामलों में तो चिकित्सक के गुणों को चिकित्सा पद्धति से अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है।

दूसरे शब्दों में, कहें तो नशे की लत का इलाज कर रहे विशेषज्ञों के पेशेवर ज्ञान और कौशल की तुलना में उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं के चलते युवा मरीजों में डाक्टर की मदद को स्वीकार करने और उन्हें ग्रहण करने में एक नाटकीय अंतर देशा जा सकता है। उदाहरण के लिए अनुकूलनशीलता और लचीलापन युवाओं के साथ काम करने वाले किसी काउंसलर के लिए महत्वपूर्ण गुण होता है। युवाओं के साथ पारस्परिक संबंध बनाने की क्षमता उनकी एक योग्यता का एक और उदाहरण है।

मादक द्रव्यों के सेवन पर कनाडा के सेंटर (सीसीएसए) ने ज्ञान, कौशल और पेशेवरों के जरिये युवाओं और अन्य आबादी के साथ मादक द्रव्यों के सेवन पर काफी अच्छा कार्य किया है। इस पेशे से जुड़े विशेषज्ञ आपने काम में विशेषज्ञता के अपने स्तर को और बढ़ाने के लिए कनाडियन सेंटर आन सब्स्टांस एब्युज़ की वेबसाइट से और अधिक उपयोगी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

उजली किरण

ठीक न होती बीमारी से टूट रहे बसंत को मिला गुंजन का सहारा

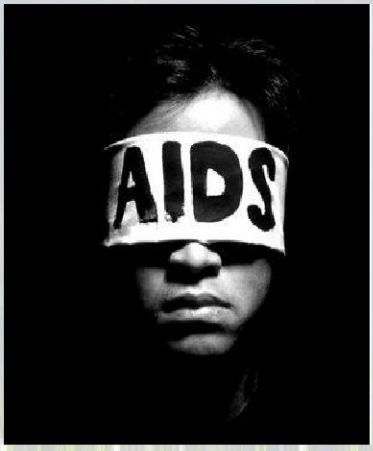

- एचआईवी पाजिटिव पाए जाने के बाद दिया सही परामर्श व सहायता
- संस्था के सहयोग से बेरोजगारी का संकट भी दूर किया गया

मेरा नाम बसंत राम कल्पनिक है। जिला कांगड़ा का निवासी हूं। मेरी आयु 55 वर्ष है। वर्ष 2007 में मैं अचानक बीमार हुआ। इस दौरान डाक्टर द्वारा दी जाने वाले कोई भी दवाई मुझ पर असर नहीं कर रही थी। एक-दो साल तक बीमारी के कारण मैं और मेरा परिवार परेशान रहा। कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए और कहां इलाज करवाया जाए। इसी परेशानी और बीमारी के चलते करीब अढ़ाई साल बीत गए और मेरी स्थिति अब इतनी ज्यादा खराब हो चुकी थी कि मैने विस्तर पकड़ लिया था।

हिम्मत जवाब दे चुकी थी और कहीं आना-जाना भी मुश्किल हो गया था। बीमारी बढ़ती देख मुझे डा. राजेंद्र प्रसाद मेडिकल कालेज अस्पताल टांडा ले जाया गया। वहां गुंजन संस्था के आउटरिच वर्कर किशन से हुई। उसे मैने अपनी बीमारी की पूरी कहानी सुनाई, तो किशन चंद ने उसी समय उसे परामर्श देते हुए एचआईवी टैस्ट करवाने को कहा।

इस तरह किशन ने जब बसंत राम का एचआईवी टैस्ट करवाया तो रिपोर्ट पाजिटिव आई। अब जाकर बसंतराम व उसके परेशान परिवार को ठीक नहीं हो रही बीमारी की असली वजह का पता चला। किशन ने बसंतराम को जरूरी परामर्श देने के साथ ही टांडा स्थित एआरटी सेंटर ले जाकर उसकी दवाई शुरू करवाई। वह नियमित तौर पर एआरटी सेंटर आने लगा और यहां से नियमित तौर पर दवा लेकर खाने लगा। इसके चलते बसंत राम की तबीयत में थोड़ा सुधार होने लगा।

इस दौरान बसंतराम की पत्नी व उसके बच्चों का भी एचआईवी टैस्ट करवाने की सलाह दी गई और उसी समय उनका टैस्ट भी करवाया गया।

हालांकि इस टैस्ट में वे नेगेटिव पाए गए। अब बसंतराम को अजीविका की चिंता सता रही थी। उसके परिवार के लिए कमाई का कोई साधन नहीं था। बसंतराम मजदूरी करके जो कमाता उसी से परिवार का खर्च चलता। लंबी बीमारी के कारण वह मजदूरी भी नहीं कर पा रहा था। इस कारण परिवार के लिए अजीविका का संकट पैदा हो गया था। उसने यह बात गुंजन संस्था के कार्यकर्ताओं को बताई। इस पर उसे गाय लेकर दूध का काम करने की सलाह दी गई। बसंतराम ने सोसायटी के माध्यम से लोन लेकर उसकी पत्नी ने एक गाय खरीदी। इसके चलते उनके परिवार का रोजगार शुरू हो गया और उनका गुजारा होने लगा।

बसंत राम ने बताया कि उसे सीएससी टांडा के कार्यकर्ताओं का पूरा सहयोग मिल रहा था। इसके चलते उसे एक स्कूल में मिड-डे-मील वर्कर की नौकरी भी मिल गई। वह खुद अजीविका कमाने लगा है और किसी पर निर्भर नहीं रहा है। उसने बताया कि शुरू में लोगों ने उसको स्कूल में रखने का विरोध किया, मगर गुंजन संस्था ने लोगों को परामर्श दिया और उन्हें सही बात बताई।

इस पर वे समझ गए और विरोध शांत हो गया। अब सब कुछ ठीक है।

दिमाग से जुड़े तथ्य, जिन्हें जान हो जाओगे आश्चर्यचकित

हमारा दिमाग एक बहुत ही जटिल और आश्चर्यजनक मशीन से कम नहीं है। हमारे शरीर की तरह दिमाग में भी 75 फीसद पानी होता है। इस कारण से जब शरीर में पानी की कमी होती है तो हमें पूरी तरह से साफ नहीं दिखाई देता है। जब दिमाग में कोई विचार आता है तो मस्तिष्क में एक नेटवर्क बनने लगता है। एक जैसे विचार या घटनाएं फिर से उसी नेटवर्क को सक्रिय कर देती हैं।

अक्सर हम देखते हैं कि जब हम किसी को उबासी लेते देखते हैं तो हमें भी उबासी आ जाती है। इसका कारण यह है कि हमारे दिमाग में कुछ ऐसी कोशिकाएं होती हैं जो कि शीशे की तरह काम करती हैं। इन्हीं कोशिकाएं के कारण हम मेलजोल बढ़ाने को प्रेरित करते हैं।

आमतौर पर हमारे दिमाग में करीब 70 हजार विचार आते हैं और बहुत सारे विचार ऐसे भी होते हैं जो कि बार-बार आते हैं। हमारे दिमाग को दर्द का कोई अहसास नहीं होता है। इसलिए समझ लें कि सिरदर्द के लिए आपका दिमाग जिम्मेदार है।

हमारे दिमाग में बहुत सारी रक्त वाहिनियां होती हैं। ये वाहिनियां इतनी लंबी होती हैं कि अगर इनको एक साथ नापा जाए तो इनकी लंबाई करीब एक लाख मील तक होती है। अगर आप तनाव में रहते हैं, तो इससे आपके दिमाग की कोशिकाएं नष्ट हो जाती हैं। तनाव होने पर दिमाग में ऐसे हार्मोन्स बनते हैं जो कि थोड़े समय के दौरान ही दिमाग की कोशिकाओं को नष्ट कर सकते हैं।

हमारी मानसिक स्थिति का शरीर पर भी असर पड़ता है। इसलिए जब हम किसी से प्यार में पड़ जाते हैं या महिलाएं मां बनती हैं तो इस दौरान दिमाग में ऑक्सीटॉक्सिन नाम का केमिकल पैदा होता है। इससे हम किसी दूसरे व्यक्ति के साथ या माताएं अपने शिशुओं के साथ गहरा संबंध बना पाती हैं।

दिमाग को लेकर कहा जाता है कि हम अपने दिमाग का बहुत थोड़ा सा, केवल 10 फीसदी, ही इस्तेमाल करते हैं। लेकिन यह एक वास्तविकता नहीं वरन एक भ्रांति है। हमें जानना चाहिए कि दिमाग के प्रत्येक भाग का एक सुनिश्चित काम होता है और उस काम को करने के लिए दिमाग का हर भाग इस्तेमाल किया जाता है।

केक मेकिंग में करियर की राह

आज कई ऐसे काम हैं जिनमें कम पूंजी लगाकर ज्यादा मुनाफा कमा सकते हैं। इन्हीं में से एक है डिजाइनर केक और पेस्ट्री बनाना। बीते कुछ सालों में ट्रेडिशनल केक कल्चर बदला है। आज डिजाइनर और थीम बेस्ड केक डिमांड में हैं। मार्केट की रिसर्च के मुताबिक आने वाले दिनों में महानगरों के अलावा छोटे शहरों में डिजाइनर केक की मांग बढ़ेगी। तो इस मौके को बिना गंवाए आप भी डिजाइनर केक मेकिंग का कोर्स कर अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा इस दिशा में नौकरी के भी अपार अवसर हैं।

यहां है जरूरत

आमतौर पर केक का नाम आते ही गोल या चौकोर आकार का एक डिजाइन सामने आता था। लेकिन आज ऐसा नहीं है। आप किसी दोस्त की पार्टी में गए होंगे तो आपको वहां स्पोर्ट्स कार की शेप का केक दिखा होगा। आप पूछे बिना रह ही नहीं पाते हैं कि कहां से बनवाया यह केक। दरअसल डिजाइनर केक का प्रचलन बढ़ रहा है। बर्थडे केक, एनिवर्सरी के केक के अलावा खास अवसरों के लिए डिजाइनर केक जैसे कार्टून, स्पोर्ट्स, फेयरवेल, ब्रेकअप आदि की थीम पर आधारित केक तैयार किए जा रहे हैं। इसलिए प्रतिस्पर्धा के इस युग में जितनी अधिक क्रिएटिविटी होगी उतनी ही आपकी पहचान दूसरों से अलग होगी।

जरूरी कोर्स

बेकिंग में आर्ट एंड साइंस की भूमिका बराबर रहती है। इस क्षेत्र में करियर बनाने की इच्छा रखने वाले युवाओं को प्रवेश के लिए न्यूनतम 12 वीं पास करने के अलावा डिप्लोमा या सर्टिफिकेट कोर्स करना अनिवार्य है। इसके बाद आप तीन माह का बेसिक सर्टिफिकेट प्रोग्राम या डिप्लोमा इन पेस्ट्री एंड बेकरी आर्ट्स भी कर सकते हैं। यहां केक मेकिंग के साथ-साथ डिजाइनर थीम की थ्योरी भी बताई जाती है। यदि एक साल का कोर्स करना चाहें तो एडवांस डिप्लोमा इन पेस्ट्री आर्ट्स और सर्टिफिकेट कोर्स इन पेस्ट्री एंड बेकरी आर्ट्स कर सकते हैं। वैसे विदेशों में कई विश्वविद्यालय डिग्री कोर्स के अलावा पीएचडी भी करवा रहे हैं।

करें ऑन लाइन कोर्स

यू ट्यूब पर भी डिजाइनर केक मेकिंग की क्लास उपलब्ध हैं। अगर आप किसी और कोर्स के साथ पार्ट टाइम क्लास करना चाहते हैं तो यह आपके लिए बेस्ट ऑप्शन है। यहां से आप जब चाहे डिजाइनर केक बनाना आसानी से सीख सकते हैं।

व्हाट्स एप से भी सीखें

सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव को देखकर कई निजी इंस्टीट्यूट व्हाट्स एप पर भी डिजाइनर केक मेकिंग कोर्स चला रही है। व्हाट्स एप नंबर +91-9821727500 पर एक-एक घंटे के कई लेवल कोर्स संचालित हैं। जिनकी फीस मात्र 1500/- रुपये है। इस तरह की सहायता से आप इस क्षेत्र की बहुत सारी बारीकियों को जान सकते हैं।

ट्रेनिंग देगी फायदा

क्षेत्र में अपनी धाक जमाने के लिए कोर्स के साथ-साथ ट्रेनिंग भी जरूरी है। ट्रेनिंग से किसी भी चीज को समझने का बेहतर मौका मिलता है। स्टोर और बेकरी में ट्रेनिंग के साथ-साथ बेकिंग, आइसिंग, डेकोरेटिंग, न्यूट्रीशन, सैनिटेशन, कस्टमर डीलिंग और व्यवसाय को समझने का तौर तरीका पता चलता है।

अवसर कहां-कहां

नामी-गिरामी बेकरी के अलावा फाइव स्टार होटलों में डिजाइनर केक डेकोरेटर के पद पर योग्यतानुसार अच्छी सैलरी के साथ काम करने का मौका मिल सकता है। यदि आप अपना व्यवसाय शुरू करना चाहें तो कुछ पूंजी लगाकर अपनी कार्य क्षमता के आधार पर मार्केट में अपना नया मुकाम हासिल कर सकते हैं।

यहां से करें कोर्स

इंस्टीट्यूट ऑफ बेकिंग ऐंड केक आर्ट, बंगलूरू
www.ibcablr.net

इंस्टीट्यूट ऑफ बेकरी टेक्नोलॉजी ऐंड मैनेजमेंट, नोएडा
http://www.aibtm.in

कुलीनरी ऐंड केक डेकोरेटिंग स्कूल, दिल्ली
http://www.nowletslearn.com

केक क्राफ्ट, मुंबई
cakekraftindia.com

लावोने बेकिंग अकादमी, बंगलूरू
www.lavonne.in

एचआईवी/एड्स से निपटने के लिए जरूरी टूल्स टुगेदर नाऊ!

दुनिया भर में चार करोड़ से भी ज्यादा एचआईवी/एड्स की चपेट में आ चुके हैं। बहुत सारे लोग अपने ही परिजनों के बीमार पड़ने या मारे जाने के कारण अप्रत्यक्ष रूप से इस बीमारी से प्रभावित हुए हैं। एचआईवी/एड्स की कहानी सिर्फ इन्हीं दो बातों पर खत्म नहीं होती। इस कहानी की अगली कड़ी हमारे ही आसपास के गली-मोहल्लों, सड़कों, बस्तियों, परिवारों और समुदायों में रची जा रही है। यही वे स्थान हैं, जहां एचआईवी/एड्स की रोकथाम के लिए कार्रवाई करना सबसे ज्यादा जरूरी है।

एचआईवी/एड्स पर विश्व भर में काम करने वाली संस्था दि इंटरनेशनल एचआईवी/एड्स एलायंस जिसे एलायंस के नाम से भी पुकारा जाता है, युरोपिय संघ का एचआईवी पर केंद्रित विश्व का सबसे बड़ा विकास संगठन है। एलाइंस की स्थापना 1993 में एचआईवी/एड्स पर होने वाली सामुदायिक कार्रवाईयों में सहायता देने वाले अंतरराष्ट्रीय गैर सरकारी संगठन के रूप में की गई थी। तब से अब तक यह संगठन 40 से ज्यादा देशों में 2000 से ज्यादा समुदाय आधारित संगठनों के साथ काम कर चुका है। इसके साथ ही इस संगठन ने अपने अनुभव से जो अहम जानकारियां या तरीके हासिल किए हैं, उन्हें हम एक सीरिज के माध्यम से आपके समक्ष रखने जा रहे हैं।

एचआईवी/एड्स से लोहा लेने वाली ताकतों समुदाय न केवल अगली कतार में बल्कि यही अगली कतार है। इसकी रोकथाम के लिए सामुदायिक मोबिलाइजेशन जरूरी है। सामुदायिक मोबिलाइजेशन के जरिए ही स्थानीय समुदायों को इस समस्या के कारणों और नतीजों से निपटने के प्रयासों में सक्रिय और असरदार हिस्सेदारी निभाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रख कर दि इंटरनेशनल एचआईवी/एड्स एलायंस ने समाज को जगरूक करने के लिए दो टूलकिट तैयार किए हैं। ये टूलकिट हैं:-

1. आल टुगेदर नाऊ! कम्युनिटी मोबिलाइजेशन फार एचआईवी/एड्स
2. टूल्स टुगेदर नाऊ! 100 पार्टिसिपेटरी टूल्स टू मोबिलाइज़ कम्युनिटीज़ फार एचआईवी/एड्स

टूल्स टुगेदर नाऊ! का मकसद ये है कि इससे समुदायों को आल टुगेदर नाऊ को अमलीजामा पहनाने में, उसका इस्तेमाल करने में मदद मिलेगी। एलाइंस को यकीन है कि इन दोनों का इस्तेमाल करने पर संगठनों और समुदायों को एचआईवी/एड्स से निपटने का एक शक्तिशाली साधन मिलेगा।

टूलकिट किस लिए:

इस टूलकिट में 100 सहभागी शैक्षणिक एवं हस्तक्षेप पीएलए दिए गए हैं। इनका एचआईवी/एड्स की रोकथाम में इस्तेमाल किया जा सकता है। पीएलए टूल्स ऐसी पारंपरिक गतिविधियां हैं, जिनके सहारे विभिन्न समुदाय और संगठन अपने आसपास एचआईवी/एड्स की स्थिति को समझ सकते हैं और अपने प्रयासों की समीक्षा व मूल्यांकन कर सकते हैं।

यह प्रकाशन इस सोच पर आधारित है कि यदि कोई संगठन या समुदाय एचआईवी/एड्स पर काबू पाना चाहता है, तो उन्हें ज्यादा से ज्यादा मिलजुल कर काम करना होगा।

टूलकिट कैसे तैयार की गई:

इंटरनैशनल एचआईवी/एड्स एलायंस ४० से भी अधिक देशों में पिछले दस साल से भी ज्यादा समय से एड्स संबंधित सामुदायिक प्रयासों में सहायता प्रदान करता आ रहा है। एलायंस की इन कोशिशों के पीछे मुख्य सोच ये रही है कि एचआईवी/एड्स गतिविधियों के आकलन, डिजाइन, क्रियान्वयन, मानिटरिंग, मूल्यांकन और इजाफे में सामुदायों की हिस्सेदारी को ज्यादा से ज्यादा बढ़ाया जाए। अपने अनुभवो के आधार पर एलायंस ने न केवल बहुत सारे सहभागी टूल्स विकसित किए हैं, बल्कि दूसरे संगठनों के टूल्स का समावेश व उपयोग भी किया है।

एलायंस तथा अन्य संगठनों ने एचआईवी/एड्स पर इस्तेमाल किए जा रहे पीएलए टूल्स की वर्ष 2004 में एक समीक्षा की थी। इस समीक्षा के बाद एलायंस और उसके सहभागी गैर सरकारी संगठनों व समुदायों ने मिलकर बहुत सारे टूल विकसित किए या पहले से मौजूद टूल्स में जरूरी संशोधन किए। यहां शामिल टूल्स और पद्धतियों को इन्हीं में से चुना गया है।

टूलकिट किसके लिए है:

यह टूलकिट एचआईवी/एड्स से जुड़े मुद्दों पर काम करने वाले संगठनों व समुदायों को मोबिलाइज करने और उनके साथ मिलकर काम करने के लिए तैयार करने के मकसद से विकसित की गई है। इस टूलकिट की सहायता से ये मिलजुल कर एचआईवी की रोकथाम, इलाज, एचआईवी/एड्स ग्रस्त लोगों की देखभाल व सहायता जैसे काम कर सकते हैं। इन कोशिशों से प्रभावित समुदायों में एचआईवी/एड्स के कारण पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों पर भी अंकुश लगाया जा सकता है। आप स्थानीय स्तर पर एचआईवी/एड्स की स्थिति का आकलन करके, इस बारे में योजना बनाने, कार्रवाई करने, मानिटरिंग करने, मूल्यांकन करने, एचआईवी/एड्स की गतिविधियों की समीक्षा करने या उनको और बड़े पैमान पर ले जाने के लिए इस टूलकिट का इस्तेमाल कर सकते हैं। जो समुदाय एचआईवी/एड्स से प्रत्यक्ष तौर पर प्रभावित हैं, उनके बीच काम करने वालों को इन टूल्स से खासी मदद मिलती है।

इस तरह होता है टूलकिट का इस्तेमाल:

यह टूलकिट समुदायों और संगठनों को ध्यान में रखकर और आल टुगेदर नाऊ! कम्युनिटी मोबिलाइजेशन फार एचआईवी/एड्स के साथ जोड़कर इस्तेमाल करने के लिए तैयार की गई है ताकि:

एचआईवी/एड्स की स्थिति को मिलकर संबोधित किया जा सके।

एचआईवी/एड्स की स्थिति का मिलकर आकलन किया जा सके।

मिलकर योजना बनाई जा सके।

योजना को साथ-साथ लागू किया जा सके।

योजना का साथ-साथ मूल्यांकन किया जा सके।

आगे की कार्रवाइयों के बारे में फैसला लिया जा सके।

एचआईवी/एड्स संबंधी कार्रवाइयों को मिलकर और आगे बढ़ाया जा सके।

अगर आपने आल टुगेदर नाऊ! टूलकिट की प्रति प्राप्त करनी है, तो इसे वेबसाइट www.aidsalliance.org से डाउनलोड कर सकते हैं या publications@aidsalliance.org पर ईमेल भेजकर मंगवा सकते हैं।

एचआईवी/एड्स प्रभावितों का जीवन स्तर सुधारने का प्रशिक्षण दिया

धर्मशाला। केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के सिद्धबाड़ी स्थित रीजनल रिसोर्स सेंटर में गुंजन संस्था के सहयोग से कम्युनिटी स्पोर्ट सेंटर हमीरपुर व कांगड़ा सहित हेल्प डेस्क सोलन के स्टाफ के लिए दो दिवसीय क्षमता वर्धन कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। बुधवार को कार्यशाला के पहले दिन स्पोर्ट सेंटरों व हेल्प डेस्क से जुड़े काऊंसलरों, आउटरिच वर्करों व कार्यक्रम समन्वयकों को एचआईवी/एड्स से प्रभावित लोगों की बेहतर तरीके से सहायता करने की ट्रेनिंग दी गई। यह जानकारी गुंजन के निदेशक संदीप परमार ने दी।

इस अवसर पर कार्यक्रम समन्वयक अजय कुमार ने बताया कि संस्था द्वारा संचालित प्रोजैक्ट यूनिटों के माध्यम से प्रदेश में करीब तीन हजार एचआईवी/एड्स प्रभावित लोगों को सक्रिय रूप से सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। इन लोगों को विभिन्न योजनाओं से जोड़ने के अलावा जीविकोपार्जन व आय बढ़ौतरी की गतिविधियों से जोड़ने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने पर बल दिया गया। प्रशिक्षण में शामिल स्टाफ मेंबर्स को इन प्रयासों को सफल व सार्थक बनाने के लिए जरूरी कदम उठाने के लिए विशेषज्ञों ने प्रशिक्षित किया।

इस बात पर बल दिया गया कि सदस्य किसी न किसी तरह एचआईवी/एड्स ग्रसित लोगों या उनके परिवारों का जीवन स्तर ऊपर उठाने व उनको रोजगार के साथ जोड़ने के लिए अपने संसाधनों के जरिये मदद करें।

ममता संस्थान से आए प्रशिक्षक सुमित ने एचआईवी/एड्स से जुड़े प्रोजैक्टस में दिए गए कार्यक्रमों की विस्तार पूर्वक जानकारी दी। साथ ही सदस्यों की भ्रांतियों का भी दूर किया गया। इस दो दिवसीय कार्यशाला में १५ सदस्य भाग ले रहे हैं। इनमें रजनी, अजय, शामथा, सचिन, पूनम देवी, रुचि ठाकुर, अजय कुमार, राकेश कुमार, चंदेल सिंह, राजेश कुमार, कल्पना, नागिन देवी, कुलदीप सिंह और मुकेश कुमार शामिल हैं। गुंजन संस्था की ओर से इन सभी के ठहरने व खाने-पीने की व्यवस्था निशुल्क की गई है।

आई.ई.सी. मेटिरियल डवेलप्मेंट - पोस्टर श्रृंखला

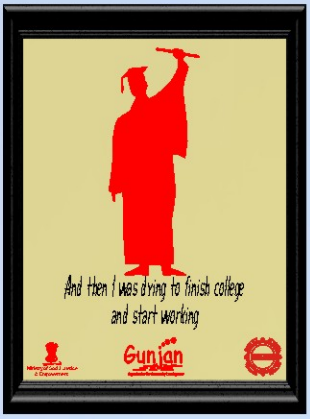

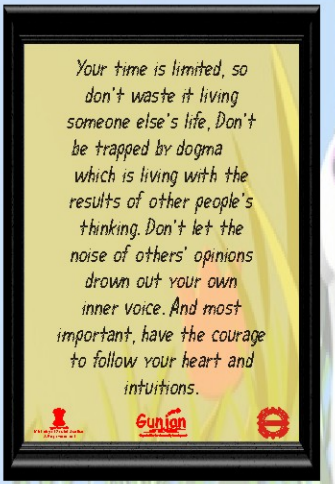

सत्यमेव जयते
Ministry of Social Justice & Empowerment
Gunjan
Organisation for Community Development
INSTITUTE OF SOCIAL DEFENCE NISD NATIONAL
Gunjan Organisation for Community Development° Regional Resource & Training Centre North - II, Tapovan Road, Tehsil-Dharamshala, Distt. Kangra (H.P.) - 176057
Phone : 91-1892-235315, 208255, 9459082624, Email: rrtcnorth.hp@gmail.com, Website: www.gunjanindia.org